स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्या कला संकाय अंतर्गत विद्यावाचस्पति (Ph.D.) हिंदी उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

(Ph.D.Synopsis)

शोध का विषय

''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''

(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में)

शोधछात्रा

बिरादार सविता अशोकराव

(M.A.D.Ed.M.Phil.)

शोधनिर्देशक

प्रोफेसर डॉ. भुक्तरे बळीराम संभाजी

(M.A.Ph.D.NET.)

हिंदी विभाग

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

जि.लातुर महाराष्ट्र–413517

संशोधन केन्द्र

हिंदी विभाग

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

फरवरी–2024

''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''
(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में)

विषयानुक्रमणिका

पहला अध्याय : तुलनात्मक साहित्य : अर्थ स्वरूप एवं परिभाषा

दूसरा अध्याय : मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

तीसरा अध्याय : अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यासों तात्विक विवेचन

चौथा अध्याय : मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास में स्त्री पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन

1. सामाजिक तुलना
2 आर्थिक तुलना
3. राजनीतिक तुलना
4. शैक्षिक तुलना
5. मनोवैज्ञानिकता तुलना
6. कामकाजी स्त्री की तुलना

पांचवाँ अध्याय : शिल्प–विधान एवं भाषा–शैली

: उपसंहार

1. संदर्भ ग्रंथ सूची
   - अ. आधार ग्रंथ
   - आ.सहायक ग्रंथ
   - इ. पत्र–पत्रिकाएँ
   - ई. कोश
   - उ. इटरनेट

“अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन”

(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में)

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	शीर्षक	पृष्ठांक
1.	भूमिका (Introduction)	4
2.	विषय चयन की प्रेरणा (Topic Selection Motivation)	7
3.	अनुसंधान का उद्देश्य (Research Objective)	8
4.	अनुसंधान की परिकल्पना (Research hypothesis)	10
5.	अनुसंधान पध्द्‌ातियाँ (Research Methods)	10
6.	अनुसंधान कार्य के शीर्षक (Title of Research Work)	11
7.	अनुसंधान कार्य (Research Work)	12
8.	अनुसंधान की उपयोगिता (Research Utility)	13
9.	अनुसंधान की मौलिकता (Originality of Research)	
10.	अनुसंधान की उपलब्धियाँ (Research achievements	14
11.	अनुसंधान की व्याप्ती और सीमाएँ (Research scope and limitations)	15
12.	मूल्यांकन एवं निष्कर्ष (Evaluation and conclusion)	
13.	परिशिष्ट (Appendix) अ.आधार ग्रंथों की सूची (List of base texts) आ. सहायक ग्रंथों की सूची (List of supporting texts) इ. पत्र–पत्रिकाएँ (Journals) ई. कोश (Treasury) उ. इटरनेट (Internet)	17

''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''

(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में)

1. भूमिका :

'उपन्यास' एक सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक विधा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य विकास में 'उपन्यास' विधा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसका सीधा संबंध मानव—समुदाय से होता है। इसका आधार यथार्थ जीवन है, तथा देखने का दृष्टिकोण वस्तुवादी और यथार्थोन्मुख है। समाज का वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का प्रबल माध्यम 'उपन्यास' ही है। 'उपन्यास' में किसी—न—किसी स्तर पर रोचकता या मनोरंजन के गुण उपस्थित हैं। जिसके कारण यह पाठकों के मन को बांधकर रखने की क्षमता रखता हैं। जब व्यक्ति कुछ विचार विमर्श करता है, तो उसके मन और मस्तिष्क में बहुत सारे भाव उत्पन्न होने लगते हैं। उन भावों को रूप देने के लिए वह लेखन का प्रयोग करता है। इस दृष्टि से भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए 'उपन्यास' बेहतर है।

आज आधुनिक समय में उपन्यास एक ऐसी विधा है, जिसमें कोई भी लेखक अपने भावों एवं विचारों को पूरी आत्मीयता एवं स्वतंत्रता के साथ अभिव्यक्त कर सकता है। इसी कारण हिंदी साहित्य की विधाओं में 'उपन्यास' विधा का अपना विशेष स्थान है। शायद यही मेरी वजह रही कि, मैंने अपने विचारों को और अधिक विस्तार देने के लिए अपना रुख उपन्यास की ओर आकर्षित किया है। इसीलिए शोधकार्य करने के लिए ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) का चयन किया है। साठोत्तर हिन्दी लेखिकाओं में श्रीमती मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती का गणनीय स्थान है। तत्कालीन सामाजिक व वैयक्तिक मन की अवस्था को अनुभवित करके उन्होंने अपने उपन्यासों में स्वाभाविकता एवं यथार्थता लाने का प्रयास किया है। मंजुल भगत साहित्य जगत के लिए स्तुति तुल्य है। मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी इतनी संवेदनशील लेखिका है कि, साहित्यिक क्षेत्र में एक नामी समाजिक मूल्य की लेखिका का स्थान प्राप्त कर चुकी है। स्त्री—सशक्तीकरण के इस युग में मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जैसी लेखिकाओं का रचनात्मक योगदान स्मरणीय है। इसी उद्देश्य से मैंने उनके उपन्यास अनारों एवं जिंदगीनामा पर तुलनात्मक अध्ययन करने का निर्णय लिया है। मेरे शोध प्रबंध का विषय है, ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) का है।

2. विषय चयन की प्रेरणा :

मैंने हाली में उनके महाश्वेता देवी का 'बनिया बहू' उपन्यास पर एम.फिल. का लघु शोध कार्य पूर्ण किया है, इस उपन्यास की स्त्री पात्र मुझे क्या, किसी के भी दिल को छू लेने वाली नारी

पात्र है। बनिया–बहू की कथा 16वीं शताब्दी के एक आख्यान पर आधारित है, जिसे तत्कालीन कवि मुकुंदराम चक्रवर्ती ने अपनी कृति 'चंडीमंगल' में लिपिबद्ध किया था। महाश्वेता देवी ने यह आख्यान इसी पुस्तक से उठाया है और उसे एक अत्यंत मार्मिक उपन्यास में ढाला है। महाश्वेताजी का मानना हैरू ''बनिया–बहू संभवतः आज भी प्रासंगिक है। कानून को धता बता कर आज भी बहुविवाह प्रचलित है और 'बेटे की माँ' न हो सकने की स्थिति में आज भी स्त्रियाँ खुद को अपराधी मानती हैं। अर्थात् अभी भी हम बीसवीं शताब्दी तथा अन्य बीती शताब्दियों में एकसाथ रह रहे हैं।'' बनिया–बहू बहुविवाह प्रथा की इसी चिराचरित त्रासदी की कहानी है।

एक स्त्री के बाँझपन के हाहाकार के साथ उसके द्वारा एक दूसरी अत्यंत कोमल, कमनीय तथा सरल बालिका पर किए गए अकथ अत्याचार से नष्ट होते पारिवारिक जीवन और सुख–शांति का मर्मस्पर्शी आख्यान है यह उपन्यास। अंततः दोनों ही स्त्रियाँ सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों के मकड़जाल में फँस कर दम तोड़ देती हैं, जबकि उनका कोई दोष नहीं। लेखिका ने दोनों स्त्रियों के साथ पूरी सहानुभूति के साथ, तन्मय होकर, उन स्थितियों का विश्लेषण तथा उद्घाटन किया है, जिनमें एक भयानक सामाजिक विनाश के बीज निहित हैं। एक सिद्धहस्त कथा लेखिका की कलम से निकली एक अनुपम औपन्यासिक कृति।

स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों में जिन नामों का अपना अलग साहित्यिक रूतबा है उनमें कृष्णा सोबती जी का नाम अग्रणी है। हिन्दी कथा जगत में जिन्होंने अपने लेखन के बल पर तहलका मचा दिया उन चुनिंदा लेखिकाओं में कृष्णा जी का स्थान महत्त्वपूर्ण मानना होगा। अनेकविध विषयों तथा विधाओं में लेखन कर उन्होंने अपनी मेघावी प्रतिभा का परिचय दिया है। कृष्णा सोबती के उपन्यास 'जिदंगीनामा' का केन्द्रबिन्दु नारी जीवन है।

वैसे देखा जाए तो मुझे मंजुल भगत का 'अनारो' उपन्यास में भी स्त्री संवेदना इतनी अच्छी लगी कि, उसे पढ़ने के बाद मेरे मन में जिज्ञासा निर्माण हुई कि क्यों न मैं इन हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों की तुलनात्मक अध्ययन कर लू और मैनें सोचा की पीएच–डी. शोध कार्य के लिए मैं मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) करू लू और बस यही बात मैंने मेरे मार्गदर्शक डॉ. प्रोफेसर भुक्तरे बळीराम सर से कहा, तो उन्होंनें मंजुल भगत के 'अनारो' कृष्णा सोबती के 'जिंदगीनामा' उपन्यासों की सक्षिप्त कथावस्तु पढ़ ली और तुरंत मुझसे कहा कि, हाँ बहुत सही उपन्यास है, आज के युग में नारी विमर्श को उन्होंने अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। और उन्होंने कहा मेरी तरफ से तो ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) पर शोधकार्य के लिए अनुमती है। इसी तरह विषय का चयन हुआ।

3. अनुसंधान का उद्देश्य :

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में जो अच्छा एवं बुरा होता है, साहित्यकार उसे अपने साहित्य में स्थान देता है। समाज में जिस व्यवस्था की तत्कालीन समय में आवश्यकता होती है, उस व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए भी साहित्य की रचना की जाती है, अथवा किसी विशेष कार्य के लिए ऐसे विशेष विषय का चयन किया जाता है। ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) इस अनुसंधान कार्य के पीछे मेरे अहम् उद्देश्य है, जो इस प्रकार है।

1. आज भी नारी, समाज शोषित–पीड़ित है। इसी पीड़ित प्रवृत्तियों को परखना एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
2. स्त्री विमर्श एवं उनकी सामाजिक मूल्य को व्यक्तिगत भावभूमि से उपर उठाकर सामाजिकता के स्तर पर पहुँचाना।
3. उत्तर आधुनिकता की दौड़ में शहरीकरण के कारण गाँव का प्रत्येक व्यक्ती शहर की ओर स्थलांतर करना चाहता है, या फिर कर रहा है। मूलतः स्थलांतर के साथ–साथ अपने शहर के भाग दौड़ को दुनियाँ में 'स्त्री की अस्मिता एवं अस्तित्व' को भूल गया है। ऐसे नारी को 'सामाजिक मूल्य' के प्रति सजग करना ही मेरे अनुसंधान का उद्देश्य है।
4. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना मेरा अहंम् उद्देश्य है।
5. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती स्त्री संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन करना मेरा उद्देश्य है।
6. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती स्त्री संवेदना की समानता एवं असमानता का तुलनात्मक अध्ययन करना मेरा उद्देश्य है।
7. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती का शिल्प विधाना मूलतः स्वानुभूत सत्य है। इस भाषा, शैली, शब्द प्रयोग को परखना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहा है।

इस दृष्टि से ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) का व्यापक परिचय देना तथा कुछ रहस्यों को खोलना ही इस शोधकार्य का मूल लक्ष्य रहा है। इनके उपन्यासों 'स्त्री की सामाजिक मूल्य' का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। ऐसी ही 'स्त्री की सामाजिक मूल्य' का परिवेश हम पर भी प्रभाव डालता है, जो हमारे ही अनुभवों से जुड़ जाता है। मेरा उदेश्य और लक्ष्य उपन्यास से संबंधित 'स्त्री की सामाजिक मूल्य' को अवगत कराना है। इस दृष्टि से मुझे ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) इस विषय पर शोधकार्य करने का निश्चिय किया है। की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। मैंने अपने शोध कार्य में ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में मैंने उनके उपन्यासों की 'नारी संवेदना' एवं

'सामाजिक मूल्य' स्त्री अस्मिता पर विशेष रूप से ध्यान दिया है। उनके उपन्यास में 'नारी संवेदना' एवं 'सामाजिक मूल्य' की टकराहट पर्याप्त चर्चा का विषय बनी हुई है।

4. अनुसंधान की परिकल्पना : Research hypothesis

परिकल्पना को मराठी में गृहतिके कहा जाता है और अंग्रेजी में इस शब्द को Hypothesis कहा जाता है। किसी भी घटना को समझने या स्पष्ट करने के लिए एक विचार को मानना पड़ता है और उसके अनुसार उस घटना की व्याख्या करनी पड़ती है। यदि वह अर्थ उपयुक्त है और वास्तविक घटना की समझ के अनुरूप है, तो शोध कार्य में कल्पित विचार अर्थात परिकल्पना स्वीकार्य हो जाती है। फिर वह एक सामान्य नियम या सिद्धांत का रूप लेकर स्थिति को प्राप्त कर लेती है। इंद्रियों की सहायता से, जहाँ आवश्यक है वहाँ उस कथन एवं घटनाओं को अनुसंधान की दिशा तैयार की जाती है वहाँ परिकल्पना का सहारा लिया जाता है। परिकल्पना से तार्किक रूप से संभावित परिणामों का अनुमान लगाया जाता है और यह देखने के लिए देखा जाता है कि क्या वास्तविक घटनाएं अपेक्षित और अनुमानित परिणामों से मेल खाती हैं या नहीं । इसे मानदंड या सत्यापन को परिकल्पना Hypothesis कहा जाता है।

''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) इस शोध कार्य के सत्यापन का सहारा लेते हुए निम्नलिखिन परिकल्पना तयार की है। जो इस प्रकार से इस शोधकार्य के दरम्यान देखी जा सकती है।

1. समकालीन हिंदी महिला साहित्यकार के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री संवेदना को सूक्ष्मतः से जाना जा सकता है।
2. स्त्री विमर्श और मुक्ति आंदोलन के भारतीय संदर्भ को प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल, आधुनिक काल और नवजागरण काल और आज के दौर के आधार पर स्त्री विमर्श पर विचार किया जा सकता है।
3. स्त्री को मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठित पहचान करवाना तथा उसके शोषण और उत्पीड़न के विरोध में आवाज उठाना एवं स्त्री संघर्ष को समाज के सामने उजागर किया जा सकता है।
4. स्त्री संबंधी विभिन्न समस्याओं पर विचार विमर्श करना।
5. स्त्री को अपने अस्तित्व और अस्मिता की पहचान करवाना तथा मानसिक रूप से सुदृढ़ बनाना और उसकी शारीरिक शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाया जा सकता है।
6. स्त्री को अपने भीतर सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक शैक्षिक रूप से मानसिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

स्त्री विमर्श के पीछे के क्या कारण रहे हैं? इसके लिए हमें स्त्री के ऐतिहासिक स्वरूप को समझना आवश्यक है जिसके बाद ही यह जाना जा सकता है कि स्त्रियों की स्थिति में किस प्रकार का परिवर्तन आया है और आ रहा है? और आज स्त्री ऐसी क्यों है? इस के लिए उपरोक्त दोन्हों दोन्हों उपन्यासकारों एवं उनके उपन्यासों के संदर्भों को आधार बनाकर जानने की आवश्यकता है। तभी हम मंजुल भगत और कृष्णा सोबती एवं उनके स्त्री विमर्श से संबंधित उपन्यासों का समझ सकते हैं।

5. अनुसंधान पध्द्तियाँ :

ज्ञान का कोश इतना विस्तृत है कि, इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए अध्ययनार्थी को उसे छोटे–छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण कर पड़ता है । इसलिए शोध कार्य की व्यापकता को देखकर मैंने "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" को निम्नलिखित अनुसंधान पद्धतियों का सहारा लिया है। जैसे अध्ययन–अध्यापन पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, प्रयोगात्मक पद्धति, पूर्व अनुसंधान व्यक्ति से साक्षात्कार प्रश्नावली पद्धति तथा निष्कर्ष पद्धति आदि का सहारा लिया है।

6. अनुसंधान कार्य शीर्षक :

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने इस शोधकार्य ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) को निम्नांकित छः अध्याय शीर्षक के आधार पर विभाजित किया है। मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती का उपन्यास साहित्य 'नारी जीवन' एवं 'सामाजिक मूल्य' को केन्द्र में रखकर रचा गया है। मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास की कथावस्तु और सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य है। इसमें मैंने मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के निम्नलिखित छः अध्याय पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

1. पहला अध्याय : तुलनात्मक साहित्य : अर्थ स्वरूप एवं परिभाषा
2. दूसरा अध्याय : मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
3. तीसरा अध्याय : अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यासों तात्विक विवेचन
4. चौथा अध्याय : मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास में स्त्री पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन
   - 4.1 सामाजिक तुलना
   - 4.2 आर्थिक तुलना
   - 4.3 राजनीतिक तुलना
   - 4.4 शैक्षिक तुलना
   - 4.5 मनोवैज्ञानिकता तुलना

4.6 कामकाजी स्त्री की तुलना

5. पांचवाँ अध्याय : शिल्प–विधान एवं भाषा–शैली

उपसंहार

6. अनुसंधान कार्य :

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने इस शोधकार्य ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) को निम्नांकित छः अध्याय शीर्षक के आधार पर विभाजित किया है।

पहला अध्याय : तुलनात्मक साहित्य : अर्थ स्वरूप एवं परिभाषा

इस अध्याय में तुलनात्मक साहित्य का सैध्दांतिक अध्ययन किया जायेगा। 21 सदीं में तुलनात्मक साहित्य की मांग बढ़ रही है। इसी दृष्टी से तुलनात्मक साहित्य का सैध्दांतिक अध्ययन किया जायेगा। साथ में तुलना शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा पर प्रकाश डाला जायेगा।

दूसरा अध्याय : मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जायेगा। व्यक्ति समाज से ही बना है। सामाजिक परिस्थितियों की व्यक्तित्व की बनावट में मुख्य भूमिका होती है। साहित्यकार का व्यक्तित्व भी अपने परिवेश समाज से प्रभावित होता है यह उनके साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है। इस अध्याय में मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक परिस्थितियों, व्यक्तियों, घटनाओं का वर्णन किया जायेगा और किस प्रकार से परिस्थितियाँ उनके कृतित्व में दिखायी देती है यह बताया जायेगा।

यहाँ तुलना इस बात की नहीं होती कि कौनसी लेखिका श्रेष्ठ है, बल्कि तुलना इस बात की होगी कि, दोनों लेखिकाओं में समानता और भिन्नता के बिन्दु कौनसे हैं। विचार, भाव, संवेदनाएं, एक दूसरे के साथ मिलते–जुलते हैं या फिर अलग हैं इस दृष्टि से अध्ययन किया जायेगा। इस तरह से तुलनात्मक साहित्य हमें साहित्य की व्यापक अध्ययन की दिशा की ओर ले जाता है। इस हेतु इस अध्याय में अध्ययन किया जायेगा।

तीसरा अध्याय : अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यासों तात्विक विवेचन

अधिक्तर विद्वानों ने उपन्यास के छः तत्त्व माने हैं। 1. कथानक/कथावस्तु, 2. पात्र/चरित्र–चित्रण, 3. कथोप कथन/संवाद, 4. देशकाल/वातावरण, 5. भाषा–शैली एवं 6. उद्देश्य। इस अध्याय में मंजुल भगत का 'अनारों' उपन्यास एवं कृष्णा सोबती सोबती का 'जिंदगीनामा' उपन्यास का उपरोक्त त्वत्व के आधार पर तात्विक विवेचन किया जायेगा।

चौथा अध्याय : मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास में स्त्री पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन

इस अध्याय में मैंने मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास में स्त्री पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। जिनमें सामाजिक तुलना, आर्थिक तुलना, राजनीतिक तुलन, शैक्षिक तुलना, मनोवैज्ञानिकता तुलना एवं कामकाजी नारी की तुलना का अध्ययन किया जायेगा।

पांचवाँ अध्याय : शिल्प–विधान एवं भाषा–शैली :

इस अध्याय में मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास की भाषा–शैली का अध्ययन किया जायेगा। अंत में शोधकार्य का सार उपसंहार में दिया जायेगा।

1. अनुसंधान का महत्व :

''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) यह अनुसंधान कार्य के उपरांत यह ज्ञात हुआ है कि, अनारों एवं जिंदगीनामा के उपन्यासों में चित्रित नारी और उस से संबंधिन संवेदना का चित्रण है, जिसमें नारी की सही अथवा गलत छवि का अंकन होता है। कथावस्तु में उनके माध्यम से सामाजिक मूल्य को व्यक्त करना है। उपन्यासकार का उद्देश्य ही 'स्त्री विमर्श' तथा उनके समस्या को सुलझाना है। इसलिए मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी का योगदान हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री संवेदना के लिए महत्वपूर्ण रहा है। समकालिन महिला उपन्यासकारों ने भी प्रमुख रूप से समाज में व्याप्त 'नारी संवेदना' और उनकी मानसिकता को स्पश्ट करने का प्रयास किया है। शोध की दृष्टि से ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) का अध्ययन होना समय की माँग है। क्योंकि उनके उपन्यासों की 'नारी संवेदना' पर स्वतंत्र रूप से आजतक अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है ।''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) का जो प्रयोग किया है, उसका अध्ययन अपना महत्त्व रखता है। उपन्यासों की कथावस्तु के रूप में 'नारी संवेदना' का प्रयोग किया है, उसका अध्ययन होना समय की जरूरत है। लेखिका की उपन्यासों की कथावस्तु द्वारा 'नारी संवेदना एवं विमर्श' को समझना शोध का अपना महत्त्व है।

2. अनुसंधान की उपयोगिता :

मेरे शोध की उपयोगिता यह है कि, हिन्दी साहित्य में ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) के नये प्रयोगों और साहित्य को मानव यथार्थ के नए सिद्धातों से जोड़कर नये आयाम स्थापित किये हैं, तथा इस शोध विषय के माध्यम से 'नारी संवेदना' का चित्रण, समाज में नारी की पीड़ा घुटन समस्याओं से परिचित कराकर साहित्य को एक नई दृष्टि देने का मेरा एक नगण्य प्रयास होगा मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती का संपूर्ण उपन्यास साहित्य 'नारी संवेदना' से ओत–प्रोत है। शायद इसका कारण यह भी हो सकता है कि, मंजुल भगत' स्वयं एक भावुक लेखिक हैं । भावुक लेखिक की उपन्यासों में 'नारी संवेदना' का पाया जाना

कोई विचित्र बात नहीं है। मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास साहित्य का अध्ययन करते समय यह बात स्पष्ट हो जाती है कि, हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में उनका योगदान सर्वथा विशिष्ट एवं मौलिक है।

उन्होंने नारी जीवन को केंद्र में रखकर उपन्यास साहित्य की रचना की है। इसलिए इसमें 'नारी संवेदना' से जुड़ी समस्याएँ अधिक नजर आती हैं। उन्होंने नारी के आंतरिक दुःख, दर्द एवं पीड़ा के साथ साथ अन्याय एवं अत्याचार के प्रति विद्रोह करके, परिवार के भरण–पोषण के लिए काम करनेवाली नारी का चित्रण अपने उपन्यास साहित्य में बखूबी किया है। नारी का प्रेम, त्याग, भावुकता, विद्रोह आदि का विवेचनात्मक अध्ययन यहाँ दिखाई देता है। नारी के प्रति पुरुष की उपेक्षा तथा अन्याय एवं अत्याचारों के बावजूद उसका अपने परिवार को बिखरने से बचाना मंजुलजी की रचना की काफी महत्वपूर्ण लगती है।

3. अनुसंधान की उपलब्धियाँ :

मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी के उपन्यासों की विशेषता यह है, कि उनमें विभिन्न विचारों द्वारा हमारे समाज में घटित घटनाओं के अलग–अलग पहलू को सामने लाने का प्रयास किया है। भाषा–शैली की दृष्टि से भी मंजुल भगत के उपन्यास साहित्य अपनी अलग पहचान बनाता है। इसी कारण मंजुल भगत हिन्दी उपन्यास साहित्य में लोकप्रिय बनी है। ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में) के विविध आयाम शोध–विषय के अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष रूप में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, वे निम्नलिखित रूप से उपलब्धियॉं प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

1. हिंदी साहित्य क्षितिज पर नारी के बाद के युग में एक सुप्रतिष्ठित एवं गणमान्य नाम है, मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी का लिया जाता है।
2. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती बहुमुखी प्रतिभा के, धनी एवं बहुआयामी साहित्यकार हैं। कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, यात्रा–वर्णन, समीक्षा आदि विभिन्न विधाओं के प्रणेता वास्तव में 'नारी संवेदना' के हमदर्दी है। मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी अपनी भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए प्रमुख उपन्यासकार हैं। वस्तुतः मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी बीसवीं सदी तथा इक्कीसवीं सदी के संधि–स्थल के युगचेता, युगदृष्टा, युगसृष्टा एवं कथाकारों में मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी का स्थान मील के पत्थर के समान है।
3. गुणवत्ता एवं विविधता की दृष्टि से हिंदी उपन्यास साहित्य में मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी का योगदान 'नारी संवेदना' में अद्वितीय है। वास्तव में मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती ने 'नारी संवेदना' को पल्लवित किया है।

4. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी के उपन्यास संसार ग्रामांचल तथा नगरीय–महानगरीय जीवन बोध 'नारी संवेदना' पर आधारित है।
5. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी के उपन्यास सामाजिक मूल्य, मानव जीवन की उन अभिवृत्तियों से संबन्धित हैं, नारी को विस्तृत सीमा को गति प्रदान करती हैं ।
6. सार्वभौमिक सामाजिक मूल्य जो मूल्य सम्पूर्ण समाज में फैले होते है, और सभी लोगों पर लागु होते हैं । जैसे सच्चाई सभी समाज में उत्तम गुण के रूप में स्वीकार की जाती है । विशिष्ट सामाजिक मूल्य जो मूल्य किसी समाज विशेष तक ही सीमित होते है । मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यास जाति, धर्म, प्रान्त आदि के आधि न रहते हुए मानवतावादी दृष्टि से है, तो यह व्यवहार विशिष्ट मूल्यों से संबन्धित माना जाएगा ।
7. मनुष्य का सर्वप्रथम परिचय ही सामाजिक संस्था परिवार से होता है। परिवार के द्वारा ही उसके समस्त वैयक्तिक, आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। व्यक्ति के सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों की निर्मिति तो समाज द्वारा होती ही है, उसके जैविक तथा मनोजैविक मूल्यों की स्वीकृति के लिए भी उसे समाज पर ही आश्रित रहना पड़ता है। समाज मूल्यों का निर्माण व स्वरूप निर्धारण ही नही करता वरन् उसकी अभिव्यक्ति एवं प्रकाशन का माध्यम तथा उसकी पूर्ति के स्वरूप को भी निश्चित करता है। जैसे मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के उपन्यासों मे व्यक्त सामाजिक मूल्य है, किन्तु इसकी अभिव्यक्ति व पूर्ति के लिए व्यक्ति कों सामाजिक–संस्था–विवाह पर निर्भर रहना पड़ता है ।
8. सामाजिक मान्यताएँ व्यक्ति में सामाजिकता का विकास करती है और उसकी मूल्य–दृष्टि का निरन्तर नियमन करती रहती है। समाज में अलग–अलग प्रकार के संस्कार आदर्श, नाम प्रचलित होते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को उसके बाल्यकाल से ही प्रभावित करते हैं ।
9. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी के उपन्यासों की 'नारी संवेदना' में अंकित है, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा नारी जीवन की बहुमुखी यथार्थ 'नारी संवेदना' का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अनारों एवं जिंदगीनामा मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती

4. अनुसंधान कार्य की मौलिकता :

अध्ययन को सरल व सुगठित बनाने के लिए विषय को निश्चित रेखाओं व सीमाओं में बाँध लेना श्रेयस्कर होता है, क्योंकि विषय को परिसीमित कर लेने से दृष्टि में भटकाव नहीं आता और लक्ष्य की ओर उन्मुखता बनी रहती है। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध अर्थात "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" से संबन्धित अनेक पहलुओं पर विचार किया गया है । यह विषय व्यापक गंभीरता लिए हुए है। अतः इस पर केन्द्रित होकर कार्य करना अपेक्षित है ताकि मंजुल

भगत जी की उपन्यासों में व्यक्त 'नारी संवेदना' और सामाजिक मूल्य को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। यह विषय शोध –कार्य की दृष्टि से नवीन एवं मौलिक है।

5. अनुसंधान कार्य की व्याप्ति और सीमाएँ :

अलग पहचान बनाता है। इसी कारण मंजुल भगत हिन्दी उपन्यास साहित्य में लोकप्रिय बनी है। ''अनारों एवं जिंदगीनामा उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन''(स्त्री विमर्श के परिपेक्ष्य में)यह शोध–प्रबंध हिंदी साहित्य की व्यापक आयाम की अभिव्यक्ति करती है। प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान की रूपरेखा लिखते समय इस विषय के विविध आयाम मेरे सामने आये है । प्रस्तुत शोध की अपनी सीमा के कारण उन विविध आयामों का विस्तृत विवेचन करना संभव नहीं होगा । यह मेरी विषयगत मर्यादा है, तथा विषय की अति व्यापकता के कारण मैं, इन विषयों के प्रति ध्यानं दे सकी, इसलिए इस विषय को चयन कर संशोधन कार्य करना चाहा है।

6. मूल्यांकन एवं निष्कर्षः

1. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी के उपन्यासों में नारी मन को 'नारी संवेदना' बनाए रखने तथा उनकी 'नारी चेतना' को विकसित करने में विषेष भूमिका निभाई है। उनके उपन्यास साहित्य में चित्रित प्रत्येक युग की 'नारी संवदना' एवं सामाजिक मूल्य को अलग महत्व प्राप्त है। क्योंकि लेखक ने गाँव की अनपढ़ नारी से लेकर आधुनिक काल की फैषनेबल नारी तक की 'संवेदना' को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया है। प्रायः वे अपने उपन्यासों में 'नारी संवेदना' का समर्थन करते दिखाई पड़ते हैं। मंजुल भगत जी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के विरुद्ध हैं। समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का लक्ष्य समाज में सब लोगों को योग्यता, श्रम एवं काम के अवसरों का विकास करने की सुविधा अभिव्यक्त किया है।
2. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती जी नारी वादी विचारधारा से प्रभावित थे। इसलिए उनके उपन्यासों में सहज ही नारी की नीतियों की आलोचना और सोच की स्पष्ट झलक दिखती है। सिंहावलोकन में जहाँ उन्होंने नारी जीवन की कथा लिखी, नारी संवेदना का सिंहावलोकन करते हुए, उसकी कमियों और कमजोरियों को भी अपने उपन्यास में चित्रित किया है। मंजुल भगत जी प्रगतिशील विचारों की नारी है। इन्होंने समाज में प्रचलित नारी की मान्यताओं और परंपराओं को बड़े नजदीक से देखा। जहाँ एक ओर इन्होंने समाज को प्रगति के मार्ग पर अग्रेसर करने वाली नारी मान्यताओं को महत्त्व दिया है, वहीं समाज में विकार उत्पन्न करने वाली सामाजिक रूढ़ियों तथा परंपराओं आदि का कड़ा विरोध किया है।
3. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती के संपूर्ण उपन्यास सामाजिक मूल्यों को अर्जित करती है। इसमें सामाजिक के अंतर्गत व्यक्ति, परिवार तथा समाज आदि सामाजिक व्यवस्थाएँ, संस्कार, आदर्श, नाम, रूढ़ि, परंपरा, सभ्यता और संस्कृति आदि सामाजिक मान्यताएँ आमतौर से दिखाई देती है।

सामाजिक मूल्य के अंतर्गत शिक्षा, धर्म, दर्शन, नीति, विज्ञान, कला, साहित्य आदि आ जाते हैं, जो कि मंजुल भगत के उपन्यास एक प्रमाणिक दस्तावेज है।

4. मंजुल भगत एवं कृष्णा सोबती उपन्यासों की भाषाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक व्यवस्था के प्रत्तो आक्रोश और विद्रोह दिखाई देता है। साथ ही भाषा सहज, सरल होकर भी अमानवीय पशूतुल्य जीवन को प्रकट करने में सफल है। भाषा में पारंपरिक सौंदर्य का विरोध किया गया है। नए मुहावरें, लोकोक्तियाँ,गाली–गलोच वाली अभद्र भाषा प्रयोग किया है।
5. भूमंड़लीकरण के युग में साहित्य की समीचीनता स्वयं प्रभावित होती है। आधुनिक विस्तृत राष्ट्रीयता, उदात्त अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के रूप में विश्व–बंधुता और मानवता का स्वर, मंजुल भगत जी के साहित्य में प्रस्फुटित और स्पंदित हो रहा है। इस महत्वपूर्ण कार्य को उन्होंने अपने साहित्य–सृजन द्वारा पूर्ण किया है।

7. परिशिष्ट :

अनुसंधान कार्य में परिशिष्ट का उपयोग अनुसंधान कार्य के अंत में किया जाता है। परिशिष्ट में अध्ययन सहित शोध पत्र, के प्रारूपण के लिए एक शैली दिशानिर्देशों का पालन करता हैं। परिशिष्ट में सामान्य तौर से आपके पाठ स्त्रोत, तालिका विवरण, आंकड़ा संसाधन, चार्ट, संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ, मूल ग्रंथ या अन्य ग्रंथों को परिशिष्ट में जोड़ा जाता है, पुस्तक के बारे में, प्रकाशन के बारे में, प्रकाषन वर्श के बारे में आगे की व्याख्या हो सकती है। या अन्य जानकारी में निर्दिष्ट किया जाता है। इस तरह से परिशिष्ट अनुसंधान कार्य की सामग्री है, जिसे अनुसंधान कार्य में अद्यतन किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(अ) मूल ग्रंथ :

उपन्यास

1. मंजुल भगत, अनारो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976
2. ज़िन्दगीनामा, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1979

(आ) आधार ग्रंथ :

1. अजिता के. नायर, सत्तरोत्तरी हिंदी कहानियों में बदलते मानवीय संबंध, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2000
2. डॉ.अनिता, कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2006
3. डॉ.अनिल गोयल, हिन्दी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका, आर्याना पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1978
4. डॉ–अमर ज्योति, मंजुल भगत के कथासहित्य में नारी चेतना,अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 1999
5. श्रीमती आशारानी व्होरा, भारतीय नारी दशा और दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1983
6. इंदुप्रकाश पाण्डेय, हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2004
7. डॉ.इंद्रनाथ मदान, आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
8. डॉ.उषा यादव, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999
9. कमल किशोर गोयनका,मंजुल भगत कथा साहित्य,भाग 2 किताबघर प्रकाशन, नईदिल्ली, 2004
10. डॉ.नगेन्द्र, नयी समीक्षा रू नये संदर्भ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974
11. नीलम गोयल, स्वातंत्रोत्तर हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अलगाव, गुरुनानकदेव यूनिवर्सिटी, अमृतसर, 1987
12. डॉ.ननीहार गाते, स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विभिन्न रूप, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1996
13. डॉ.सविता चोखोबा किरते, आठवें दशक की लेखिकाओं के उपन्यास में व्यक्त स्त्री चरित्र, विनय प्रकाशन, कानपुर, 2007
14. डॉ.साधना अग्रवाल, वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995

(इ) हिन्दी कोश ग्रन्थ :

1. नालन्दा विशाल शब्दसागर, श्री नवल जी. आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली, 2010
2. मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश, राममूर्ति सिंह, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 1974
3. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. रामचन्द्र वर्मा पष्ठ सं. 1914
4. अंग्रेजी–हिन्दी शब्द कोश, हरदेव डॉ. बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्लीः सं. 2000
5. हिन्दी साहित्य कोश, धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वारणासी, सं. 1985
6. श्यामसुन्दरदास (सं.) हिन्दी शब्द सागर (चौथा भाग) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2018
7. हरदेव बाहरी, बृहत् अंग्रेजी–हिन्दी कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 1969
8. हरदेव बाहरी, राजपाल हिन्दी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2002
9. आचार्य रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, चौथा खंड, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1965
10. डॉ.हरदेव बाहरी, हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2002

(उ) पत्र–पत्रिकाएँ :

1. आजकल, नई दिल्ली
2. आलोचना, नई दिल्ली
3. इन्द्रप्रस्थ भारती, नई दिल्ली
4. एक और अन्तरीप, जयपुर
5. साहित्य अमृत, नई दिल्ली
6. साहित्य कुंज, कनाडा
7. सृजन कुंज, श्रीगंगानगर
8. नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

(ऐ) Websites

1. www.books.google.com
2. www.hindiliterature.com
3. www.wikipedia.org/wiki/mausam
4. www.ramdarashmishrablogspot.com

शोधछात्रा
बिरादार सविता अशोकराव

शोधनिर्देशक
प्रोफेसर डॉ. भुक्तरे बळीराम